



0974CH03

तृतीय अध्याय

सन्धि

व्याकरण के संदर्भ में 'सन्धि' शब्द का अर्थ है वर्ण विकार। यह वर्ण विधि है। दो पदों या एक ही पद में दो वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य अर्थात् संहिता में जो वर्ण विकार (परिवर्तन) होता है, उसे सन्धि कहते हैं, यथा— विद्या + आलयः = विद्यालयः। यहाँ पर विद् + आ + आ + लयः में आ + आ की अत्यन्त समीपता के कारण दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक 'आ' वर्ण रूप दीर्घ एकादेश हो गया है। सन्धि के मुख्यतया तीन भेद होते हैं—

1. स्वर सन्धि (अच् सन्धि),
2. व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि), एवं
3. विसर्ग सन्धि

1. स्वर (अच्) सन्धि

दो स्वर वर्णों की अत्यन्त समीपता के कारण यथाप्राप्त वर्ण विकार को स्वर सन्धि कहते हैं। इसके निम्नलिखित भेद हैं—

- i) **दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)**— यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरों के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ हो जाते हैं।

अ/आ + आ/अ = आ

इ/ई + ई/इ = ई

उ/ऊ + ऊ/उ = ऊ

ऋ/ऋ + ऋ/ऋ = ऋ

उदाहरण—

पुस्तक + आलयः

=

पुस्तकालयः

देव + आशीषः

=

देवाशीषः

दैत्य + अरि:	=	दैत्यारि:
च + अपि	=	चापि
विद्या + अर्थी	=	विद्यार्थी
गिरि + इन्द्र	=	गिरीन्द्र:
कपि + ईश:	=	कपीश:
मही + ईश:	=	महीश:
नदी + ईश:	=	नदीश:
लक्ष्मी + ईश्वर:	=	लक्ष्मीश्वर:
सु + उक्ति:	=	सूक्ति:
भानु + उदय:	=	भानूदय:
पितृ + ऋणम्	=	पितृणम्

- ii) **गुण* सन्धि (आद् गुणः)**— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' आए। दोनों के स्थान पर ए एकादेश हो जाता है। इसी तरह यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'उ' या 'ऊ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाते हैं। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आए तो दोनों के स्थान पर 'अर्' एकादेश हो जाता है।

उदाहरण —

अ/आ + इ/ई	=	ए
उप + इन्द्र:	=	उपेन्द्र:
देव + इन्द्र:	=	देवेन्द्र:
गण + ईश:	=	गणेश:
महा + ईश:	=	महेश:
नर + ईश:	=	नरेश:
सुर + ईश:	=	सुरेश:

* अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

लता + इव	=	लतेव
गंगा + इति	=	गंगेति
अ/आ + उ/ऊ	=	ओ
भाग्य + उदयः	=	भाग्योदयः
सूर्य + उदयः	=	सूर्योदयः
नर + उत्तमः	=	नरोत्तमः
हित + उपदेशः	=	हितोपदेशः
महा + उत्सवः	=	महोत्सवः
गंगा + उदकम्	=	गंगोदकम्
यथा + उचितम्	=	यथोचितम्
गंगा + ऊर्मिः	=	गंगोर्मिः
महा + ऊरुः	=	महोरुः
नव + ऊढ़ा	=	नवोढ़ा
अ/आ + ऋ/ॠ	=	अर्
देव + ऋषि	=	देवर्षिः
ग्रीष्म + ऋतुः	=	ग्रीष्मर्तुः
वर्षा + ऋतु	=	वर्षर्तुः

- iii) **वृद्धि* सन्धि (वृद्धिरचि)**— यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ' एकादेश हो जाता है। इसी तरह 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के स्थान पर 'औ' एकादेश हो जाता है।

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

उदाहरण—

मम + एव	=	ममैव
एक + एकम्	=	एकैकम्
तव + एव	=	तवैव

* आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

अद्य + एव	=	अद्यैव
लता + एव	=	लतैव
तथा + एव	=	तथैव
सदा + एव	=	सदैव
देव + ऐश्वर्यम्	=	देवैश्वर्यम्
आत्म + ऐक्यम्	=	आत्मैक्यम्
अ/आ + ओ/औ	=	औ
जल + ओघः	=	जलौघः
मम + ओषधिः	=	ममौषधिः
नव + ओषधिः	=	नवौषधिः
विद्या + औचित्यम्	=	विद्यौचित्यम्
आत्म + औत्सुक्यम्	=	आत्मौत्सुक्यम्

iv) **यण् संधि (इको यणचि)**— इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के स्थान पर यण् (य्, व्, र्, ल्) हो जाता है। जब इ, ई, उ, ऊ, ऋ ऋ, तथा लृ के बाद कोई असमान स्वर आए तो 'इ' को य्, उ को व्, ऋ, को 'र्' तथा 'लृ' को 'ल्' आदेश हो जाता है।

उदाहरण—

यदि + अपि	=	यद्यपि
इति + आदि	=	इत्यादि
अति + आचारः	=	अत्याचारः
इति + अवदत्	=	इत्यवदत्
नदी + आवेगः	=	नद्यावेगः
सखी + ऐश्वर्यम्	=	सख्यैश्वर्यम्
सु + आगतम्	=	स्वागतम्
अनु + अयः	=	अन्वयः
अनु + एषणम्	=	अन्वेषणम्

मधु + अरिः	=	मध्वरिः
वधू + आगमनम्	=	वध्वागमनम्
पितृ + आदेशः	=	पित्रादेशः
पितृ + उपदेशः	=	पित्र्युपदेशः
मातृ + आज्ञा	=	मात्राज्ञा
लृ + आकृतिः	=	लाकृतिः

- v) **अयादि सन्धि (एचोऽयवायावः)**— जब ए, ऐ, ओ तथा औ के बाद कोई स्वर आए तो 'ए' को अय्, 'ऐ' को आय्, 'ओ' को अव् तथा 'औ' को आव् आदेश हो जाते हैं। इसे **अयादिचतुष्टय** के नाम से जाना जाता है।

उदाहरण—

ने + अनम्	=	नयनम्
शे + अनम्	=	शयनम्
नै + अकः	=	नायकः
भो + अनम्	=	भवनम्
भानो + ए	=	भानवे
पौ + अकः	=	पावकः
नौ + इकः	=	नाविकः
भौ + उकः	=	भावुकः

- vi) **पूर्वरूप सन्धि (एङः पदान्तादति)**— पूर्वरूप सन्धि को अयादि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पद के अन्त में स्थित ए, ओ के बाद यदि ह्रस्व 'अ' आए तो 'ए+अ' दोनों के स्थान पर पूर्वरूप सन्धि 'ए' एकादेश तथा 'ओ+अ' दोनों के स्थान पर 'ओ' एकादेश हो जाता है। अर्थात् ए-ओ के पश्चात् आने वाला 'अ' अपना रूप ए-ओ में ही (विलीन कर) छुपा देता है। उस विलीन 'अ' का रूप लिपि में अवग्रह चिह्न (ऽ) द्वारा अंकित किया जाता है, जैसे— हरे + अत्र में हरयत्र होना चाहिए था परन्तु 'अ'

'ए' में समा गया और रूप बना हरेऽत्र। यहाँ उच्चारण के समय 'हरेत्र' ही कहा जाता है (अवग्रह का उच्चारण नहीं होता)।

उदाहरण—

ते + अपि	=	तेऽपि
हरे + अव	=	हरेऽव
वृक्षे + अपि	=	वृक्षेऽपि
जले + अस्ति	=	जलेऽस्ति
गोपालो (गोपालः) + अहम्	=	गोपालोऽहम्
विष्णो + अव	=	विष्णोऽव

प्रकृतिभाव

vii) 'प्लुतप्रगृह्य अचि नित्यम्'— प्रकृतिभाव का अर्थ है सन्धि करने का निषेध करना, अर्थात् प्रकृत वर्णों में विकृति (परिवर्तन) न करके उन्हें ज्यों का त्यों बनाए रखना। वस्तुतः इसे सन्धि का भेद न कहकर सन्धि का अभाव ही कहना चाहिए क्योंकि सन्धि नियम के लागू होने की स्थिति में भी सन्धि कार्य नहीं होता। यदि कोई वर्ण प्लुत या प्रगृह्य संज्ञक होता है और उसके बाद अच् आता है तो प्लुत एवं प्रगृह्य वर्णों का सन्धि न होते हुए प्रकृति भाव होता है।

प्रगृह्य संज्ञा

- (क) ईदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्,
 (ख) अदसो मात्
 (क) ईदन्त, ऊदन्त तथा एदन्त द्विवचन रूपों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अर्थात् ऐसे द्विवचन, जिनके अन्त में ई, ऊ अथवा ए होता है, उनकी प्रगृह्यसंज्ञा होती है तथा जिनकी प्रगृह्य संज्ञा होती हैं, उनके बाद अच् होने पर किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होती।

यथा— कवी + इच्छतः, विष्णू + इमौ, बालिके + आगच्छतः, यहाँ पर कवी, विष्णू, तथा बालिके ये क्रमशः ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त द्विवचन के रूप होने के कारण प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः यहाँ किसी प्रकार की सन्धि नहीं होती, इसलिए ये कवी इच्छतः, विष्णू इमौ, बालिके आगच्छतः ही रहेंगे, न कि कवीच्छतः इत्यादि।

(ख) अदस् शब्द के 'म्' के बाद 'ई' या 'ऊ' आए तो वहाँ पर भी प्रगृह्य संज्ञा होती है।

यथा— अमी + ईशाः, अमू + आसाते। यहाँ पर 'अमी' तथा 'अमू' प्रगृह्य संज्ञक हैं, अतः किसी भी प्रकार की सन्धि नहीं होगी।

- प्लुत वर्ण में प्रकृतिभाव का उदाहरण है, एहि कृष्ण३ अत्र गौश्ररति। यहाँ पर अ+अ में दीर्घ सन्धि नहीं हुई, क्योंकि सम्बोधन पद 'कृष्ण' में 'अ' प्लुत है।

viii) पररूप सन्धि (एडि पररूपम्)— उपसर्ग के 'अ' के पश्चात् यदि 'ए' या 'ओ' आए तो उनका पररूप एकादेश हो जाता है। इस पररूप सन्धि को वृद्धि सन्धि का अपवाद कहा जा सकता है। पररूप कार्य से तात्पर्य है कि जब पूर्वपद का अन्तिम वर्ण अगले शब्द के आदि वर्ण के समान होकर उसमें मिल जाए, जैसे— प्र + एजते = प्रेजते में वृद्धि कार्य प्रैजते होना चाहिए था, लेकिन 'प्र' में स्थित 'अ' की स्थिति 'ए' में ही मिल गई अर्थात् अ+ए इन दोनों के स्थान पर 'ए' एकादेश हो गया है। यहाँ पर 'अ' की अपनी सत्ता ही नहीं बची। अतः प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति हुआ।

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

यथा— चन्द्र + उदयः = चन्द्रोदयः / चन्द्रौदयः / चन्द्रुदयः

उत्तरम्— चन्द्रोदयः

- | | |
|--|---------|
| i) मातृ + ऋणम् = मातर्णम् / मातृणम् / मातृणम् | - |
| ii) यदि + अपि = यद्यपि / यदपि / यदापि | - |
| iii) मत + ऐक्यम् = मतेक्यम् / मतैक्यम् / मत्येकम् | - |
| iv) भानु + उदयः = भान्वुदयः / भानुदयः / भानूदयः | - |
| v) भौ + उकः = भावकः / भाविकः / भावुकः | - |
| vi) विष्णो + इह = विष्णविह / विष्णवेह / विष्णोह | - |
| vii) सर्वे + अत्र = सर्वे अत्र / सर्वेऽत्र / सर्व अत्र | - |
| viii) गङ्गा + इव = गङ्गैव / गङ्गोव / गङ्गोव | - |

प्र. 2. अधोलिखितेषु सन्धिविच्छेदं रूपं पूरयित्वा सन्धेः नाम अपि लिखत—

यथा— अन्वेषणम् अनु + एषणम् - यण् सन्धि—

- | | | | | |
|---------------|---|--------------|---|-------|
| i) तवैव | — | + एव | — | |
| ii) नदीव | — | नदी + | — | |
| iii) केऽपि | — | + अपि | — | |
| iv) अत्याचारः | — | अति + | — | |
| v) शयनम् | — | + अनम् | — | |
| vi) यथोचितम् | — | यथा + | — | |

प्र. 3. यत्र प्रकृति भाव - सन्धिः अस्ति तत्पदं (✓) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत यत्र च नास्ति तत्पदं (×) इति चिह्नेन चिह्नीकुरुत—

- | | |
|----------------------|----------|
| i) नदी एते | () |
| ii) वृक्षे अपि | () |
| iii) मुनी एतौ | () |
| iv) साधू उपरि गच्छतः | () |

- | | | |
|-------|------------------|-----------|
| v) | सखी एषा | () |
| vi) | मुनी इच्छतः | () |
| vii) | सभायाम् कवी आगतौ | () |
| viii) | नदी इयं वहति | () |

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) कवीन्द्रः अद्य नवीनां कवितां श्रावयति।
..... +
- ii) कंसः सर्वेषु अत्याचारम् करोति स्म।
..... +
- iii) गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि सः पापेभ्यः विमुच्यते।
..... +
- iv) यथा रामः पठति तथैव श्यामः पठति।
..... +
- v) वानराः सर्वत्र वृक्षेऽपि कूर्दन्ति।
..... +

2. व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के पश्चात् स्वर या दो व्यञ्जन वर्णों के परस्पर व्यवधानरहित सामीप्य की स्थिति में जो व्यञ्जन या हल् वर्ण का परिवर्तन हो जाता है, वह व्यञ्जन सन्धि कही जाती है।

i) श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः)

- 'स्' या 'त' वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्) का 'श्' या 'च' वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) के साथ (आगे या पीछे) योग होने पर 'स्' का 'श्' तथा 'त' वर्ग का 'च' वर्ग में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण—

मनस् + चलति (स् + च् = श्च)	=	मनश्चलति
रामस् + शेते (स् + श् = श्श)	=	रामश्शेते
मनस् + चञ्चलम् (स् + च् = श्च)	=	मनश्चञ्चलम्
हरिस् + शेते (स् + श् = श्श)	=	हरिश्शेते

'त' वर्ग का 'च' वर्ग

उदाहरण—

सत् + चित् (त् + च् = च्च)	=	सच्चित्
सत् + चरित्रम् (त् + च् = च्च)	=	सच्चरित्रम्
उत् + चारणम् (त् + च् = च्च)	=	उच्चारणम्
सत् + जनः (त्(द्) + ज् = ज्ज)	=	सज्जनः
उत् + ज्वलम् (त्(द्) + ज् = ज्ज)	=	उज्ज्वलम्
जगत् + जननी (त्(द्) + ज् = ज्ज)	=	जगज्जननी

ii) ष्टुत्व (ष्टुना ष्टुः)

- यदि 'स्' या 'त' वर्ग का 'ष्' या 'ट' वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ तथा ण) के साथ (आगे या पीछे) योग हो तो 'स्' का 'ष्' और 'त' वर्ग के स्थान पर 'ट' वर्ग हो जाता है।

उदाहरण— 'स' वर्ग का 'ष्' वर्ग

रामस् + षष्ठः (स् + ष् = षष्) = रामषष्ठः
 हरिस् + टीकते (स् + ट = ष्ट) = हरिष्टीकते

'त' वर्ग का 'ट' वर्ग

उदाहरण—

तत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = तट्टीका
 यत् + टीका (त् + ट् = ट्ट) = यट्टीका
 उत् + डयनम् (त्(द्) + ड् = ड्ड) = उड्डयनम्
 आकृष् + तः (ष् + त् = ष्ट) = आकृष्टः

iii) जश्त्व (झलां जशोऽन्ते)

- पद के अन्त में स्थित झल् के स्थान पर जश् हो जाता है। झलों में वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण तथा श्, ष्, स् तथा ह् कुल 24 वर्ण आते हैं। इस तरह झल् के स्थान पर जश् (ज, ब, ग, ड, द) होता है। वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। ष्, श्, स्, ह् में ष् के स्थान पर 'ड्' आता है। अन्य का उदाहरण प्रायः नहीं मिलता है।

उदाहरण—

वाक् + ईशः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = वागीशः
 जगत् + ईशः (त् + स्वर = तृतीय वर्ण द् + स्वर) = जगदीशः
 सुप् + अन्तः (प् + स्वर = तृतीय वर्ण ब् + स्वर) = सुबन्तः
 अच् + अन्तः (च् + स्वर = तृतीय वर्ण ज् + स्वर) = अजन्तः
 दिक् + अम्बरः (क् + स्वर = तृतीय वर्ण ग् + स्वर) = दिगम्बरः
 दिक् + गजः (क् + ग् = ग्ग) = दिगगजः
 सत् + धर्मः (त् + ध् = द्ध) = सद्धर्मः
 अप् + जम् (प् + ज् = ब्ज्) = अब्जम्
 चित् + रूपम् (त् + र् = द्र्) = चिद्रूपम्

iv) चत्वं (खरि च)

- यदि वर्गों (क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग) के द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ वर्ण के बाद वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण या श्, ष्, स् आए तो पहले आने वाला वर्ण अपने ही वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।

उदाहरण—

सद् + कारः (द् + क् = त्क्)	=	सत्कारः
लभ् + स्यते (भ् + स् = प्स)	=	लप्स्यते
दिग् + पालः (ग् + प् = क्प)	=	दिक्पालः

v) अनुस्वार (मोऽनुस्वारः)

- यदि किसी पद के अन्त में 'म्' हो तथा उसके बाद कोई व्यञ्जन आए तो 'म्' का अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरण—

हरिम् + वन्दे	=	हरिं वन्दे
अहम् + गच्छामि	=	अहं गच्छामि

vi) परसवर्ण (अनुस्वारस्य यदि परसवर्णः)

- अनुस्वार के बाद कोई भी वर्गीय व्यञ्जन आए तो अनुस्वार के स्थान पर आगे वाले वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है। यह नियम पदान्त में कभी नहीं भी लगता है।

उदाहरण—

पदान्त में -	संस्कृतं पठति।
	संस्कृतम्पठति

अं + कितः (ं + क् = इक्)	=	अङ्कितः
सं + कल्पः (ं + क् = इक्)	=	सङ्कल्पः
कुं + ठितः (ं + ठ = ण्ठ)	=	कुण्ठितः
अं + चितः (ं + च् = ज्य)	=	अञ्चितः

vii) लत्व (तोर्लि)

- यदि “त” वर्ग के बाद 'ल्' आए तो तवर्ग के वर्णों का 'ल्' हो जाता है। किन्तु 'न्' के बाद 'ल्' के आने पर अनुनासिक 'लँ' होता है। 'लँ' का आनुनासिक्य चिह्न पूर्व वर्ण पर पड़ता है।

उदाहरण—

उत् + लङ्घनम् (त् + ल् = लल्)	=	उल्लङ्घनम्
तत् + लीनः (त् + ल् = लल्)	=	तल्लीनः
उत् + लिखितम् (त् + ल् = लल्)	=	उल्लिखितम्
उत् + लेखः (त् + ल् = लल्)	=	उल्लेखः
महान् + लाभः (न + ल् = लल्)	=	महल्लान्भः
विद्वान् + लिखति (न् + ल् = लल्)	=	विद्वल्लिखति

viii) छत्व (शश्छोऽटि)

- यदि 'श्' के पूर्व पदान्त में किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण हो या र्, ल्, व् अथवा ह् हो तो श् के स्थान पर 'छ्' हो जाता है।

उदाहरण—

एतत् + शोभनम् (त् + श् = छ्)	=	एतच्छोभनम्
तत् + श्रुत्वा (त् + श् = छ्)	=	तच्छ्रुत्वा

ix) 'च्' का आगम— (छे च)

- यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् 'छ्' आए तो 'छ्' के पूर्व 'च्' का आगम होता है।

उदाहरण—

तरु + छाया (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	तरुच्छाया
अनु + छेदः (उ + छ् = उ + च् + छ्)	=	अनुच्छेदः
परि + छेदः (इ + छ् = इ + च् + छ्)	=	परिच्छेदः

x) 'र्' का लोप तथा पूर्व स्वर का दीर्घ होना (रो रि)

उदाहरण—

- यदि 'र्' के बाद 'र्' हो तो पहले 'र्' का लोप हो जाता है तथा उसका पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण—

स्वर् + राज्यम् (र् + र् = आ + र्) = स्वाराज्यम्

निर् + रोगः (र् + र् = ई + र्) = नीरोगः

निर् + रसः (र् + र् = ई + र्) = नीरसः

xi) न् का ण् होना—

- यदि एक ही पद में ऋ, र् या ष् के पश्चात् 'न्' आए तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है।

उदाहरण— कृष्ण, विष्णु, स्वर्ण, वर्ण इत्यादि।

- अट् अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह्, य्, व्, कवर्ग, पवर्ग, आङ् तथा नुम् इन वर्णों के व्यवधान में भी यह णत्व विधि प्रवृत्त हो जाती है।

उदाहरण—

नरा + नाम् = नराणाम्

ऋषी + नाम् = ऋषीणाम्

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिविच्छेदरूपं पूरयत—

- i) दिगम्बरः — + अम्बरः (दिक् / दिग्)
- ii) मच्छिरः — मत् + (छिरः / शिरः)
- iii) जगदीशः — + ईशः (जगत् / जगद्)
- iv) अयं गच्छति — + गच्छति (अयं / अयम्)
- v) नीरोगः — + रोगः (निर् / नीर्)
- vi) तल्लीनः — तत् + (लिनः / लीनः)

प्र. 2. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत —

- i) सत् + जनः — सज्जनः / सत्जनः
- ii) तत् + श्रुत्वा — तच्छ्रुत्वा / तच्छ्रुत्वा
- iii) विद्वान् + लिखति — विद्वान्लिखति / विद्वान्लिखति
- iv) सम् + कल्पः — सम्कल्पः / सङ्कल्पः
- v) उत् + लेखः — उल्लेखः / उल्लेखः

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानां यथापेक्षं सन्धिम् अथवा सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) सर्वे जगच्छिवानि कार्याणि कुर्वन्तु।
- ii) यत्पाठे उत् + लिखितम् तत् सर्वं पठत।
- iii) नीरोगः जनः सुखी भवति।
- iv) कोकिलः पं + चमे स्वरे गायति।
- v) सः तरुच्छायायाम् पठति।
- vi) मानी मानम् + न त्यजति।

3. विसर्ग सन्धि

विसर्ग (:) के पश्चात् स्वर या व्यञ्जन वर्ण के आने पर विसर्ग के स्थान पर होने वाले परिवर्तन को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

- i) **सत्त्व (विसर्जनीयस्य सः)**— यदि विसर्ग (:) के बाद खर् प्रत्याहार के वर्ण (अर्थात् प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स्) हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। परन्तु यदि विसर्ग (:) के बाद श् हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर श् आयेगा तथा यदि ट् या ठ् हो तो विसर्ग (:) का 'ष्' हो जाता है।

उदाहरण—

नमः + ते	=	(: + ते = स्ते)	नमस्ते
बालकः + तरति	=	(: + त = स्त)	बालकस्तरति
इतः + ततः	=	(: + त = स्त)	इतस्ततः
निः + चलः	=	(: + च = श्च)	निश्चलः
शिरः + छेदः	=	(: + छे = श्छे)	शिरश्छेदः
धनुः + टङ्कारः	=	(: + ट = ष्ट)	धनुष्टङ्कारः

- ii) **षत्व**— यदि विसर्ग (:) के पूर्व 'इ' या 'उ' हो तथा बाद में क्, ख् या प्, फ् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर ष् हो जाता है।

उदाहरण—

निः + कपटः	=	(: + क = ष्क)	निष्कपटः
निः + फलः	=	(: + फ = ष्फ)	निष्फलः
दुः + कर्म	=	(: + क = ष्क)	दुष्कर्म
यदि नमः और पुरः के बाद क्, ख् या प्, फ् आए तो विसर्ग (:) का स् हो जाता है।			

नमः + कारः (: + क = स्का) नमस्कारः

पुरः + कारः (: + क = स्का) पुरस्कारः

- iii) विसर्ग का रुत्व-उत्त्व, गुण तथा पूर्वरूप (अतो रोरप्लुतादप्लुते)—
यदि विसर्ग (:) से पहले ह्रस्व 'अ' हो तथा उसके पश्चात् भी ह्रस्व 'अ' हो तो विसर्ग को 'रु' आदेश, 'रु' के स्थान पर 'उ' आदेश, उसके बाद अ + उ के स्थान पर गुण 'ओ' तथा ओ + अ के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश करने पर 'ओ' ही रहता है। 'ओ' के बाद 'अ' की स्थिति अवग्रह के चिह्न (ऽ) के द्वारा दिखाई जाती है।

उदाहरण—

बालः + अयम्

विसर्ग को उ आदेश \Rightarrow बाल् + अ + : + अयम् = बाल्

अ + उ + अयम्

अ + उ को ओ आदेश \Rightarrow बाल् + अ + उ + अयम् =

बाल् + ओ + अयम्

ओ + अ को ऽ परिवर्तितरूप \Rightarrow बालो + अयम् = बालोऽयम्

सः + अवदत् = सोऽवदत्

नृपः + अवदत् = नृपोऽवदत्

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

(हशि च)—यदि विसर्ग (:) से पहले अ हो तथा बाद में वर्गों के तृतीय, चतुर्थ एवं पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् या ह्, हो तो विसर्ग के स्थान पर र्, पुनः र् आदेश का उ, तदनन्तर अ + उ को गुण होकर 'ओ' हो जाता है।

उदाहरण—

तपः + वनम् = तप् + अ + (:) + वनम्

= तप् + अ + र् + वनम्

= तप् + अ + उ + वनम् (र् के स्थान पर उ)

= तप् + ओ + वनम् (अ + उ = ओ)

= तपोवनम्

मनः + रथः = मनोरथः

बालः + गच्छति = बालो गच्छति

- iv) **रुत्व (: = र्)**— यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में कोई स्वर या घोष व्यञ्जन हो तो विसर्ग (:) के स्थान पर र् हो जाता है।

उदाहरण—

मुनिः + अयम्	=	मुन् + इ + : + अयम्
	=	मुन् + इ + र् + अयम्
	=	मुनिरयम्
हरिः + आगच्छति	=	हरिरागच्छति
गुरुः + जयति	=	गुरुर्जयति

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. समुचितं सन्धिपदं चित्वा लिखत—

- i) इतः + ततः — इतस्ततः / इतश्ततः
- ii) दुः + कर्म — दुश्कर्म / दुष्कर्म
- iii) शिवः + अवदत् — शिवावदत् / शिवोऽवदत्
- iv) मुनिः + आगच्छति — मुनिरागच्छति / मुनिरगच्छति
- v) मनः + रथः — मनरथः / मनोरथः
- vi) छात्रः + अयम् — छात्रोऽयम् / छात्रायम्
- vii) प्रथमः + नाम — प्रथमो नाम / प्रथमोऽनाम
- viii) कपि + चलति — कपिर्चलति / कपिश्चलति

प्र. 2. सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) कीटोऽपि — + अपि।
- ii) भोजो नाम — + नाम।
- iii) वर्षयोरुपरान्तम् — वर्षयोः + ।
- iv) शिविर्जयति — + जयति ।
- v) कैश्चित् — कैः + ।
- vi) महापुरुषैरपि — + अपि।
- vii) नमस्कारः — नमः + ।
- viii) धनुष्टङ्कारः — + टङ्कारः ।

प्र. 3. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदेषु सन्धिविच्छेदं कृत्वा लिखत—

- i) पितुरिच्छा वर्तते।
..... +
- ii) छात्रः तपोवनम् गच्छति।
..... +
- iii) अध्यापकः उत्तमं छात्रं पुरस्करोति।
..... +

- iv) मन्दबुद्धिः सेवकः स्वामिनः **मनस्तापस्य** कारणमभवत्।
 +
- v) **निष्कपटः** जनः शोभते।
 +
- vi) **बालो गच्छति**।
 +

© NCERT
 not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. अधोलिखितेषु संयोगं कृत्वा पदनिर्माणं कुरुत—

- i) त् + र् + आयते =
- ii) उ + ष् + ण् + अम् =
- iii) म् + ल् + आनम् =
- iv) ग् + ल् + आनिः =
- v) नि + ष् + क + र् + ष् + अः =

प्र. 2. रिक्तस्थानानि पूरयत—

- i) क्लेशः = + + एशः।
- ii) स्वभावः = स् + + अभावः।
- iii) कर्म = क् + अ + र् + + अ।
- iv) उच्छ्वासः = उ + + +
..... + आसः।
- v) उल्लासः = उ + + + आसः।

प्र. 3. अधोलिखितानि यथापेक्षितं योजयत—

- i) जननीजनकविहीनम् अनाथम् पश्यामि =
- ii) सीता पुस्तकम् अपठत् =
- iii) कुरु न त्वम् अनर्थम् =
- iv) बालकम् अनाथम् पालय =
- v) सर्वम् अहर्निशं मानय =

प्र. 4. सन्धिविच्छेदरूपं पूरयत—

- i) वृक्षच्छायायाम् = + छायायाम्
- ii) नाववतु = + अवतु
- iii) वागर्थाविव = वाक् + + इव
- iv) कोऽत्र = + अत्र

- v) वेत्तासि = वेत्ता +
- vi) महोदयः = महा +
- vii) सर्वैरत्र = + अत्र
- viii) अभ्युदयः = अभि +
- ix) तदर्थम् = तत् +
- x) शरच्चन्द्रः = + चन्द्रः

प्र. 5. सन्धिं कृत्वा लिखत—

- i) जगत् + जननी =
- ii) महा + ऐश्वर्यम् =
- iii) न + अधीतम् =
- iv) अहः + अहः =
- v) जीवति + अनाथः + अपि =
- vi) गृहे + अपि =
- vii) जगत् + माता =
- viii) महान् + लिखति =
- ix) द्वौ + एतौ =
- x) यत् + भविष्यः + विनश्यति =